भारत सरकार

शिक्षा मंत्रालय

स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या-4123

उत्तर देने की तारीख-18/08/2025

विद्यालय स्तर पर भोजपुरी भाषा के प्रसार को बढ़ावा देना

4123. **श्री दरोगा प्रसाद सरोज**:

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) देश में विद्यालय स्तर और उच्च शिक्षा स्तर पर भोजपुरी भाषा के प्रसार को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का ब्यौरा क्या है;
(ख) देश के विभिन्न राज्यों में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के स्कूलों में भोजपुरी भाषा का अध्ययन करने के लिए नामांकित छात्रों का ब्यौरा क्या है;
(ग) क्या देश में स्वदेशी भाषाओं के प्रसार को बढ़ावा देने या मातृभाषा में शिक्षा के प्रसार को बढ़ावा देने के लिए कोई निधि आवंटित की गई है; और
(घ) यदि हाँ, तो इस संबंध में सरकार द्वारा की गई पहलों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री

(**श्री जयन्त चौधरी**)

(क) से (घ) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी), 2020 के पैरा 4.11 में अन्य बातों के साथ-साथ यह प्रावधान है कि जहाँ तक संभव हो, कम से कम कक्षा 5 तक लेकिन अधिमानत: कक्षा 8 और उसके आगे तक भी शिक्षा का माध्यम गृह भाषा/मातृ भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होगी। वर्तमान में, मौजूदा नीति के तहत, बच्चे राज्यों, क्षेत्रों और निश्चित रूप से स्वयं की पसंद के आधार पर तीन भाषाएँ सीख रहे हैं।

एनईपी, 2020 और स्कूल शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ-एसई) 2023 के अनुपालन के रूप में, भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में निम्नलिखित पहल की गई हैं:

i. एनसीईआरटी द्वारा विकसित विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, स्वास्थ्य एवं कल्याण आदि विषयों की पाठ्यपुस्तकों का 22 भारतीय

भाषाओं और अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है और ये राज्यों तथा सभी स्कूल प्रणालियों के उपयोग के लिए उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों को https://ncert.nic.in/textbook.php पर देखा जा सकता है।

ii. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने बुनियादी चरण और प्रारंभिक चरण पर शिक्षा के माध्यम के रूप में बच्चे की गृह भाषा, मातृभाषा या किसी परिचित क्षेत्रीय भाषा का उपयोग करना निर्धारित किया है। तदनुसार, स्कूल भोजपुरी को शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग करने के लिए स्वतंत्र हैं।

iii. एनसीईआरटी राष्ट्रीय स्तर की स्कूल प्रणालियों और राज्यों के शिक्षकों के लिए एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है, जिसे निष्ठा (स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल) के नाम से जाना जाता है और इस कार्यक्रम में राज्यों के शिक्षक भी शामिल होते हैं। भाषा शिक्षा, भाषा शिक्षाशास्त्र और भारतीय भाषाओं का शिक्षण-अधिगम इस कार्यक्रम का एक प्रमुख केंद्र बिंदु है।

iv. बुनियादी चरण के लिए दिशानिर्देश और सिफारिशी सामग्री विकसित की गई है और स्कूल शिक्षा से जुड़ी राज्यों और अन्य राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय एजेंसियों को वितरित की गई है। ये सामग्री एनसीईआरटी की वेबसाइट https://ncert.nic.in/ पर उपलब्ध है।

v. **सभी भाषाओं में प्राइमर का विकास**: प्राइमर प्रशिक्षार्थियों और भाषा सीखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए दृश्य और पाठ्यरूप में भाषा सीखने और उससे परिचित होने तथा संदर्भों में भाषा को पहचानने और उसका उपयोग करने हेतु पहली पुस्तक है। प्राइमर एनसीईआरटी और शिक्षा मंत्रालय की वेबसाइट https://ncert.nic.in/primers.php पर उपलब्ध हैं। केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल), मैसूर और एनसीईआरटी ने संयुक्त रूप से भारत की जनगणना में सूचीबद्ध सभी 117 मातृभाषाओं में प्राइमर विकसित किए हैं। इन प्राइमरों का उद्देश्य स्कूलों में भाषाओं का दस्तावेज़ीकरण और शिक्षण करना है।

vi. **एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत भाषा संगम** : भारत सरकार ने भाषा संगम कार्यक्रम के माध्यम से सभी भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने हेतु एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम शुरू किया है। स्कूली बच्चे ऑडियो और वीडियो की सहायता से 22 अनुसूचित भाषाओं में 100 वाक्य सीखते हैं। यह कार्यक्रम पिछले सात वर्षों से लागू है और देशभर के स्कूल इसमें भाग ले रहे हैं और भारतीय भाषाएँ सीख रहे हैं। दीक्षा पोर्टल https://ncert.nic.in/bs-2021.php पर पाठ्य और ऑडियो-वीडियो दोनों सामग्री उपलब्ध है।

vii. **बहुभाषिक जादुई पिटारा**: जादुई पिटारा को किसी भी स्कूल में बुनियादी स्तर पर आवश्यक सामग्री के एक आदर्श उदाहरण के रूप में विकसित किया गया है। यह उपयोगी सामग्री की एक विस्तृत श्रृंखला प्रस्तुत करता है और ऐसी सामग्री विकसित करते समय ध्यान में रखी जाने वाली संवेदनशीलताओं (उम्र-अनुरूप, संवेदी अनुभव और स्थानीय) को प्रदर्शित करता है। पिटारा में खिलौने, खेल, पहेलियाँ, कठपुतलियाँ, पोस्टर, फ़्लैशकार्ड, कहानी कार्ड, कहानी की किताबें, छात्रों के लिए खेल-पुस्तिका और शिक्षक पुस्तिकाएँ हैं। एनसीएफएफएस का मुख्य परिवर्तनकारी पहलू 'खेल के माध्यम से सीखना' है। एनसीएफ-एफएस में उल्लेख है कि इस स्तर पर बच्चे खेल के माध्यम से - गतिविधि और कार्य के माध्यम से - सबसे अच्छा कैसे सीखते हैं। बच्चे कई तरीकों - बात करना, सुनना, खिलौनों का उपयोग करना, सामग्री के साथ काम करना, चित्रकारी, चित्र बनाना, गाना, नृत्य करना, दौड़ना और कूदना से सीखने का आनंद लेते हैं। जादुई पिटारा 22 भारतीय भाषाओं में और एनसीईआरटी की वेबसाइट https://diksha.gov.in/jadoo/explore.html पर भी उपलब्ध है। जादुई पिटारा को डिजिटल रूप में भी परिवर्तित किया गया है और यह https://ejaaduipitara.ncert.gov.in/explorejaadu.html पर 22 भाषाओं में उपलब्ध है।

viii. **भारतीय भाषा उत्सव**: स्कूल, शिक्षक शिक्षा और अन्य शैक्षणिक संस्थान विभिन्न सांस्कृतिक, जातीय, सामाजिक और शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से भारतीय भाषा का उत्सव मना रहे हैं। 11 दिसंबर इस उत्सव का अंतिम दिन है, जिसमें स्कूल और अन्य संस्थान अपने स्कूलों में भारतीय भाषाओं से संबंधित गतिविधियों का प्रदर्शन कर रहे हैं।

ix. 19 मई 2025 को शुरू किए गए भारतीय **भाषा ग्रीष्मकालीन शिविर (बीबीएससी) 2025** का उद्देश्य छात्रों को अपनी रुचि की एक और भारतीय भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित करना है। इसका उद्देश्य स्कूली छात्रों के बीच बहुभाषिकता को आनंदमय और आकर्षक तरीके से बढ़ावा देना है, जिससे वे भारतीय भाषाओं की भाषाई और सांस्कृतिक एकता का अनुभव कर सकें। यह शिविर छात्रों को उनकी मातृभाषा के अलावा किसी अन्य भारतीय भाषा में बुनियादी संवाद कौशल हासिल करने में मदद करता है और भाषा सीखने के माध्यम से आपसी सम्मान, सांस्कृतिक प्रशंसा और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देता है। 13 अगस्त 2025 की स्थिति के अनुसार, बीबीएससी ने 27 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों (यूटी)/स्वायत्त निकायों के विभिन्न विषयों में कुल 5.26 करोड़ लोगों की भागीदारी दर्ज की है, जिसमें भाषा समूह में 22 अनुसूचित भाषाओं सहित 74 भाषाएँ शामिल हैं।

एनईपी 2020 की सिफारिशों के अनुसार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने भारतीय भाषा समिति (बीबीएस) के साथ मिलकर उच्चतर शिक्षा में अकादमिक लेखन और पाठ्यपुस्तकों के अनुवाद की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए 'अस्मिता' परियोजना की अवधारणा तैयार की है। इस परियोजना के तहत, 23 नोडल विश्वविद्यालयों की पहचान उनके संबंधित राज्यों के नामित सदस्य विश्वविद्यालयों के साथ की गई थी ताकि स्नातक (यूजी) स्तर के पाठ्यक्रमों के लिए 22 भारतीय भाषाओं में मूल पाठ्य-पुस्तकें लिखने/तैयार करने के लिए लेखकों की पहचान की जा सके। आज तक, नोडल विश्वविद्यालयों द्वारा 759 पुस्तकों का प्रस्ताव दिया गया है और स्नातक (यूजी) स्तर के पाठ्यक्रमों के लिए 22 भारतीय भाषाओं में पाठ्य-पुस्तकों के लेखन/अनुवाद के लिए 1089 से अधिक संभावित लेखकों की पहचान की गई है। अनुमानित योजना 22 भाषाओं में प्रत्येक में 1000 पाठ्यपुस्तकें, कुल मिलाकर 22,000 पुस्तकें तैयार करने की है।

डेटा प्रबंधन और परियोजना के समन्वयन हेतु व्यापक सुविधाओं वाला एक व्यापक डिजिटल डैशबोर्ड भी विकसित किया गया है। यह डैशबोर्ड पुस्तक लेखन प्रक्रिया की वास्तविक समय स्थिति बताने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसमें सभी हितधारकों के लिए लॉग-इन सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

इसके अतिरिक्त, चूँकि शिक्षा संविधान की समवर्ती सूची का विषय है, इसलिए संबंधित राज्य/संघ राज्य क्षेत्र (यूटी) सरकारें और उनकी एजेंसियाँ, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की भावना और अनुशंसाओं के अनुरूप, स्थानीय आवश्यकताओं और माँगों के अनुसार भोजपुरी सहित क्षेत्रीय भाषाओं में उपयुक्त पाठ्यचर्या विकसित कर सकती हैं।

****